2. ध्वनियाँ और वर्ण

वर्ण-विचार व्याकरण के मुख्य अंगों में से पहला अंग है। इसके अंतर्गत वर्णों के उच्चारण तथा लेखन पर विचार किया जाता है। वर्ण भाषा की सबसे छोटी ध्वनि या इकाई है। वर्ण को अक्षर भी कहते हैं।

- शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को हिंदी वर्णमाला के स्वर, व्यंजन आदि अन्य वर्णों की पुनरावृत्ति करवाएँ।
- बताएँ, वर्णों का क्रमबद्ध व्यवस्थित समूह वर्णमाला कहलाता है। परिभाषाएँ याद करवाएँ।
- समझाएँ, सभी वर्णों में 'अ' स्वर मिला होता है जिसके कारण वर्ण पूरे लिखे तथा पढ़े जाते हैं। क् + अ = क च् + अ = च। 'अ' के बिना सभी वर्ण आधे लिखे तथा पढ़े जाते हैं। हलंत द्वारा वर्णों का आधा रूप दर्शाया जाता है– क् (क), च् (च), स् (स) आदि।
- बच्चों को आगत स्वर 'ऑ' से परिचित कराते हुए बताएँ, यह स्वर अंग्रेज़ी शब्दों के लिए प्रयोग किया जाता है। जैसे– बॉल, डॉल, डॉक्टर आदि। समझाएँ, हिंदी भाषा भिन्न-भिन्न भाषा के शब्दों को अपने अंदर समाए हुए है।
- वर्णमाला के अतिरिक्त वर्णों ड़-ढ़ के बारे में समझाएँ। बताएँ, इनका उच्चारण ड-ढ से भिन्न होता है। चढ़ा-ढलान, रबड़-डाल आदि। शब्दों में इन वर्णों के उच्चारण द्वारा ड-ड़, ढ-ढ़ का अंतर स्पष्ट करें। यह भी बताएँ कि ड़-ढ़ वर्णों से कोई शब्द शुरू नहीं होता जबकि ड-ढ वर्णों से शब्द शुरू होते हैं।
- अनुस्वार (ं), अनुनासिक (ँ) तथा विसर्ग (:) का उच्चारण तथा लेखन समझाएँ।
- बीच-बीच में बच्चों की पाठ में उपस्थिति भी जाँचते रहें। इसके लिए पढ़ाए गए विषय से प्रश्न पूछते रहें।
- बच्चों को संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र, ज्ञ, श्र बनाना बताएँ तथा इनके उच्चारण पर भी बल दें। बताएँ, हिंदी वर्णमाला में ये चार संयुक्त व्यंजन शामिल हैं।
- बताएँ, स्वर दो रूपों में लिखे जाते हैं। एक तो अपने मूल रूप अ इ उ आदि में तथा दूसरा मात्रा रूप में। स्वरों का मात्रा रूप व्यंजनों के साथ लगाया जाता है। समझाएँ, स्वरों के चिह्न ही मात्रा कहलाते हैं।
- स्वरों की मात्राओं से बच्चों को अवगत कराएँ तथा मात्रा युक्त शब्दों का बार-बार उच्चारण भी करवाएँ।
- र में उ-ऊ की मात्रा को लगाना बताएँ।
- प्रत्येक बच्चे की समझने की क्षमता भिन्न होती है अत: पूछते रहें कि सभी बच्चे समझ पा रहे हैं या नहीं।
- द्वित्व व्यंजन तथा संयुक्त व्यंजनों का अभ्यास करवाएँ।
- 'र' के रूप रेफ़-पदेन भी समझाएँ।
- पाठ अभ्यास करवाएँ। यथासंभव सहायता भी करें।